पूर्वोत्तर भारत- सांस्कृतिक संरक्षण, विरासत और पर्यटन

- डा. गुलशन गुप्ता

पूर्वोत्तर की संस्कृति को केवल "जनजातीय संस्कृति" कहना भी इसके व्यापक स्वरूप को सीमित कर देता है। यहाँ जनजातीय समुदायों के साथ अनेक गैर-जनजातीय समुदाय भी रहते हैं और प्रत्येक राज्य के भीतर भी अनेक सांस्कृतिक परंपराएँ मौजूद हैं। अतः "पूर्वोत्तर संस्कृति" को एक एकरूप संस्कृति की बजाय बहुसांस्कृतिक और बहुस्तरीय सांस्कृतिक परिसर के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

पूर्वोत्तर भारतीय संस्कृति को ऊपरी तौर पर देखें तो विविधता का अनुभव होता है | आठ राज्य, 132 जिले, उनमें रहने वाली अनेकों जातियां, 220 से अधिक जनजातियाँ और उप-जनजातियां, इतनी ही भाषाएँ, बोलियाँ, उप-बोलियाँ और इन सभी में शामिल सांस्कृतिक विविधता | इतना होने के बावजूद पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक एकता का आधार वही नींव है जो पूरे भारत की संस्कृति को बांधे रखती है |

पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति

पूर्वोत्तर सदैव से भारत के वैदिक इतिहास से लेकर आधुनिक इतिहास तक की साझा ऐतिहासिक विरासत का महत्वपूर्ण अध्याय रहा है | कई पूर्वोत्तर राज्यों का प्राचीन इतिहास— जैसे असम, (प्राचीन कामरूप और प्रागज्योतिषपुर), अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर— महाभारत और रामायण काल से जुड़े रहे हैं । हरि-हर युद्ध (शोणितपुर) , रुक्मिणी हरण (अरुणाचल प्रदेश), अर्जुन-चित्रांगदा विवाह (मणिपुर), जैसे अनेकोंनेक उदाहरण इसका साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं | पौराणिक कथाओं के अनुसार, रुक्मिणी अरुणाचल प्रदेश के इडु-मिशमी जनजाति से थीं | भगवान कृष्ण यहीं से देवी रुक्मिणी को द्वारका ले गए थे | ऐसा माना जाता है कि डिमापुर (नागालैंड) और कछार (असम) का क्षेत्र राजा हिडिम्ब और उनकी बहन हिडिम्बा से संबंधित था | अत: भीम के हिडिम्बा के साथ विवाह का प्रसंग भी पूर्वोत्तर से जुड़ा है |

पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक विविधता

पूर्वोत्तर की संस्कृति में अनेक समुदायों और ऐतिहासिक अनुभवों का सम्मिलित योगदान है। यह विविधता इस धारणा को चुनौती देती है कि पूर्वोत्तर की संस्कृति को किसी एक "जनजातीय संस्कृति" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

राज्य प्रमुख सांस्कृतिक विशेषताएँ

अरुणाचल प्रदेश	अनेक जनजातीय परंपराएँ, बौद्ध प्रभाव, पारंपरिक हस्तशिल्प और प्रकृति-आधारित जीवन
असम	बिहू, सत्र परंपरा, साहित्य, संगीत संस्कृति
मेघालय	खासी, जयंतिया और गारो सांस्कृतिक परंपराएँ
नागालैंड	विभिन्न नगा समुदायों की सांस्कृतिक परंपराएँ, हस्तशिल्प और उत्सव
मिजोरम	मिजो सामुदायिक परंपरा, संगीत और नृत्य
मणिपुर	रासलीला, मैतेई सांस्कृतिक परंपरा, लोकतक क्षेत्र, मार्शल परंपराएँ
त्रिपुरा	त्रिपुरी एवं अन्य समुदायों की परंपराएँ, राजवंशीय और धार्मिक विरासत
सिक्किम	लेपचा, भूटिया और नेपाली सांस्कृतिक परंपराओं का अंतर्संबंध

प्रकृति और संस्कृति का संबंध

पूर्वोत्तर भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू प्रकृति के साथ गहरा संबंध है। पर्वत, नदियाँ, जंगल, झीलें और कृषि भूमि केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं हैं; वे स्थानीय समुदायों की स्मृतियों, विश्वासों, लोककथाओं और आजीविका से भी जुड़े हैं। North Eastern Council के अनुसार यह क्षेत्र Indo-Burma तथा Himalayan biodiversity hotspots से संबंधित है और यहाँ अनेक विशिष्ट वनस्पतियाँ तथा जीव पाए जाते हैं। साथ ही जैव-विविधता पर अनेक प्रकार के दबाव भी मौजूद हैं।

अध्यात्म और कला

पूर्वोत्तर में आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टि से भी समानता मिलती है | पूरे भारत की तरह पूर्वोत्तर में भी प्रकृति की पूजा (जैसे नदियों, पर्वतों और वनों का सम्मान) और कर्म-सिद्धांत का गहरा महत्व है। मणिपुर में वैष्णव परंपरा और असम में श्रीमंत शंकरदेव द्वारा स्थापित 'सत्र' संस्कृति, अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन की ही अभिव्यक्ति हैं।

पूर्वोत्तर के अधिकांश त्योहार जैसे बिहू (असम), वांगला (मेघालय), और नोंगक्रेम प्रकृति और कृषि चक्र पर आधारित हैं। ये अखिल भारतीय फसल उत्सवों (जैसे पोंगल, बैसाखी) की मूल भावना के ही समान हैं |

पूर्वोत्तर के पारंपरिक नृत्य, संगीत और हस्तशिल्प पूरे देश की कलात्मक विरासत का अभिन्न अंग हैं। यहाँ की

समृद्ध सांस्कृतिक पहचान 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को साकार करती है

पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति को आगे बढ़ाने का एक और अहम तरीका है – वहां के विरासत स्थलों का विकास और संरक्षण। 'स्वदेश दर्शन' योजना के तहत पर्यटन मंत्रालय ने पूर्वोत्तर में 16 खास परियोजनाओं को मंजूरी दी है। ये परियोजनाएं क्षेत्र की विरासत, वन्यजीव, आध्यात्मिकता, जनजातीय संस्कृति और एडवेंचर पर्यटन से जुड़ी हैं। ₹1,337.63 करोड़ की राशि से ये 16 परियोजनाएँ स्वीकृत की गई थीं| इन परियोजनाओं से पूर्वोत्तर के पर्यटन विकास में प्राकृतिक भू-दृश्य, स्थानीय संस्कृति और क्षेत्रीय पर्यटन अनुभवों को एक साथ देखने का प्रयास किया गया है। इन परियोजनाओं की प्रकृति यह स्पष्ट करती है कि पूर्वोत्तर में पर्यटन विकास को केवल प्राकृतिक सौंदर्य के उपभोग तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि उसे प्राकृतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक और साहसिक पर्यटन के विभिन्न आयामों से जोड़ने का प्रयास किया गया। उदाहरण के लिए, सरकारी अभिलेखों में असम के लिए Wildlife Circuit के अंतर्गत मानस, पोबितोरा, नामेरी, काजीरंगा और डिब्रू-सैखोवा जैसे क्षेत्रों के विकास तथा Heritage Circuit के अंतर्गत तेजपुर–माजुली–शिवसागर क्षेत्र के विकास का उल्लेख मिलता है। मणिपुर में इम्फाल–खोंगजोम क्षेत्र के पर्यटन विकास और आध्यात्मिक पर्यटन से संबंधित परियोजनाएँ भी स्वीकृत की गई थीं।

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि पर्यटन विकास और सांस्कृतिक संरक्षण एक-दूसरे के पूरक हो सकते हैं, लेकिन दोनों स्वतः समानार्थी नहीं हैं। किसी विरासत स्थल को पर्यटक स्थल में बदल देना मात्र सांस्कृतिक संरक्षण नहीं माना जा सकता। वास्तविक सांस्कृतिक संरक्षण तभी संभव है जब स्थानीय समुदाय की भागीदारी, स्थानीय ज्ञान, पारंपरिक वास्तु, भाषा, कला, धार्मिक संवेदनशीलता और सांस्कृतिक स्वायत्तता को विकास की प्रक्रिया में उचित स्थान मिले।

उदाहरण के लिए, किसी जनजातीय समुदाय की पारंपरिक बुनाई, लोकनृत्य, संगीत, भोजन, वास्तुकला या कृषि-परंपरा को केवल पर्यटन आकर्षण के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उसके सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ को भी पर्यटकों के सामने रखा जाना चाहिए। इससे संस्कृति का 'प्रदर्शन' मात्र नहीं होगा, बल्कि उसके पीछे मौजूद सामुदायिक स्मृति और जीवन-दर्शन भी सामने आएगा।

इस दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत में Community-Based Cultural Tourism की अवधारणा विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकती है। स्थानीय समुदायों को केवल पर्यटकों के लिए सांस्कृतिक प्रदर्शन करने वाले समूह के रूप में देखने के बजाय उन्हें विरासत के संरक्षक, ज्ञान-धारक और निर्णय-प्रक्रिया के सहभागी के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। इससे पर्यटन से होने वाला आर्थिक लाभ भी स्थानीय स्तर पर वितरित हो सकता है और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण के लिए प्रोत्साहन पैदा हो सकता है।

पूर्वोत्तर के संदर्भ में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ संस्कृति और प्रकृति के बीच संबंध अत्यंत गहरा है। जंगल, नदियाँ, पहाड़, झीलें और कृषि-आधारित जीवन स्थानीय समुदायों की सामाजिक स्मृति, लोकविश्वास और आजीविका से जुड़े हुए हैं। इसलिए विरासत संरक्षण की नीति को केवल निर्मित विरासत तक सीमित रखने के बजाय प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत के समेकित संरक्षण की दिशा में आगे बढ़ना आवश्यक है।

अतः पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए विरासत स्थलों का विकास तभी सार्थक होगा जब विकास का उद्देश्य केवल पर्यटकों की संख्या बढ़ाना न होकर स्थानीय संस्कृति की गरिमा, समुदाय की भागीदारी, पर्यावरणीय संतुलन और सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखना हो। इस दृष्टिकोण से पर्यटन पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति को केवल देश और दुनिया के सामने प्रस्तुत करने का माध्यम नहीं, बल्कि स्वयं उस संस्कृति के संरक्षण और पुनर्जीवन का साधन भी बन सकता है।

संदर्भ सूची

Government of India, Ministry of Tourism. (2026). *Swadesh Darshan Scheme: Projects under Swadesh Darshan and Swadesh Darshan 2.0*. Press Information Bureau.

Government of India, Ministry of Tourism. (2026). *New Initiatives to Promote Destination Based Development for Tourism*. Press Information Bureau.

Government of India, Ministry of Tourism. (2026). *Promotion of Eco-Tourism*. Press Information Bureau.

North Eastern Council. (2026). *NEC Yearbook 2026*. Ministry of DoNER, Government of India.

North Eastern Council. (2025). *NEC Yearbook 2025*. Ministry of DoNER, Government of India.

Ministry of Development of North Eastern Region. (2025–26). *Development initiatives and tourism-related programmes in North Eastern Region*. Government of India.

Government of India. (2026). *Factsheet: Swadesh Darshan and PRASHAD*. Press Information Bureau.

Sharpley, R. (2000). Tourism and sustainable development: Exploring the theoretical divide. *Journal of Sustainable Tourism, 8*(1), 1–19.

Timothy, D. J. (2011). *Cultural Heritage and Tourism: An Introduction*. Channel View Publications.

UNWTO. (2018). *Tourism and Culture Synergies*. World Tourism Organization.